शिक्षक - रवि शंकर राय, विषय - अर्थशास्त्र,
दिनांक - 25-09-2020, वर्ग - BA-III

अमेरिकी अर्थव्यवस्था में उपस्थित तीव्र की महामंदी निम्न कारणों का परिणाम थी →

(1) अत्यधिक आशावादिता एवं सुरक्षा की धारणा — प्रथम महायुद्ध के पश्चात अमेरिकी उद्यमी अत्यधिक आशावादी बन गए। युद्धकालीन अप्रत्याशित लाभों ने उन्हें निवेश वृद्धि के लिए प्रेरित किया। परिणामतः न्यूयार्क शेयर बजार में बिकने वाले शेयरों की संख्या 1927 में 18 लाख से बढ़कर 1929 में 180 लाख हो गई। अक्टूबर 1929 में 1690 लाख शेयर बिकने के लिए आए थे। परिणामतः उनके मूल्यों में भारी गिरावट आयी जो आर्थिक अवसाद के शुरुआत थी।

(2) युद्धोत्तरकालीन कृषिजन्य आय में गिरावट → प्रथम महायुद्ध के समय कृषि उत्पादों के मांग और उत्पादन में भारी वृद्धि हुई थी। युद्धोत्तर काल में मांग घटने से कृषि पदार्थों के मूल्यों में अप्रत्याशित गिरावट आयी। परिणामतः किसानों की प्रभावित कर

गयी जो औद्योगिक माल की माँग में गिरावट का कारण बनी।

③ युद्धोत्तर कालीन समृद्धि के दोषपूर्ण प्रकृति ⇒ निस्संदेह प्रथम महायुद्ध के पश्चात अमेरिकी अर्थव्यवस्था ने निरंतर समृद्धि (1917 से 1922 की अल्पकालीन मंदी को छोड़कर) का अनुभव किया। किन्तु यह समृद्धि अनेक अर्थों में दोषपूर्ण थी। मोटर उद्योग, मकान-निर्माण, और सड़क निर्माण के कार्यों में तो भारी वृद्धि हुई; किन्तु कोयला, सूती वस्त्र और जलयान निर्माण के कार्यों ~~को तो भारी वृद्धि~~ में समुचित विस्तार नहीं हो पाया। कृषि की स्थिति दयनीय बनी रही। युद्धोत्तरकालीन समृद्धि की दोषपूर्ण प्रकृति ने आर्थिक अव-सुधार की शक्तियों को बल प्रदान किया।

④ न्यून उपभोग ⇒ 1900 से लेकर 1929 तक अमेरिका में मजदूरियों की अपेक्षा लाभों में अधिक वृद्धि हुई। परिणामतः बचत और उपभोग के बीच अन्तराल बढ़ गया। J.M Clark के अनुसार, लाभ के रूप में मिलनेवाली आय का अनुपात बढ़ गया था। आय के वितरण के विषमता मे न्यून-उपभोग या अल्पउत्पादन की स्थिति

को जन्म दिया, जो आर्थिक अवसाद का प्रमुख कारण थी।

(5) आय की विषमता में वृद्धि ⇒ 1922 से लेकर 1929 तक जहाँ औद्योगिक श्रमिकों की मजदूरी में 33% की वृद्धि हुई, वही कम्पनियों के निवल लाभ में 76% की तथा हिस्सेदारी को वितरित किया जाने वाले लाभांश में 108% की वृद्धि हुई; J.K Galbraith के अनुसार 1929 के उच्च आय वाली 5% जनसंख्या को अमेरिका की एक तिहाई राष्ट्रीय आय प्राप्त होती थी। आय के अत्यधिक विषमता का अर्थ यह था कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था निवेश के उच्चे स्तर पर या विलासतापूर्ण उपभोग के उच्चे स्तर पर या दोनो पर आधारित थी। निवेश और विलासतापूर्ण व्यय दोनो अपरिहार्य रूप से व्यापक उच्चावचनो के विषय होते हैं।

(6) विदेशी व्यापार में अव्यवस्था ⇒ प्रथम महायुद्ध के पश्चात ऋणदाता देश बन जाने के बावजूद अमेरिका के आयात व्यापार पर प्रशुल्क

की ऊँची दरे बनाए रखी। अमेरिका के साथ- ~~साथ~~ प्रतिकूल भुगतान संतुलन वाले देशों को या तो स्वर्ण भेजकर या नया ऋण लेकर घाटा पूरा करना होता था। जब इन देशों के लिए स्वर्ण के निर्यात द्वारा घाटे की पूर्ति करनी संभव नहीं रही, तब उन्होंने अपने आयातों में कटौती कर दी। परिणामतः अमेरिकी निर्यात घटने लगे तथा घरेलू बजार में वस्तुओं की अधिकता उत्पन्न हो गयी।

(7) अत्यधिक सट्टेबाजी => प्रथम महायुद्ध तथा उसके बाद का समय अमेरिकी उद्योगों के लिए अभूतपूर्व समृद्धि का समय था। उद्योगों में बढ़ते हुए लाभ का कारण उनके शेयरों तथा प्रतिभूतियों मे सट्टेबाजी को बढ़ावा मिला। शेयरों पर प्रतिभूतियों की भारी खरीदारी के कारण इनके मूल्यों में 20 गुनी तक वृद्धि हुई। अन्ततोगत्वा october 1929 में ऐसी स्थिति आ गयी जब शेयरों के विक्रेता तो सब थे किन्तु क्रेता कोई नही रहा। शेयर बजार की स्थिति अत्यधिक खराब हो जाने के कारण बहुत से बैंक दिवालिया हो गया। 1929 और 1930 के दो वर्षों में ही अमेरिका के 7 हजार से अधिक बैंक फेल हो गए।

(8) बैंको की दोषपूर्ण साख नीति ⇒ प्रथम महायुद्ध के पश्चात अमेरिकी बैंको ने अत्यधिक साख का ~~सृजन~~ सृजन किया तथा स्टॉकिस्टों को बड़े पैमाने पर उधार देना शुरु किया। अतः जब शेयरों और प्रतिभूतियों के मूल्यों में अप्रत्याशित गिरावट आयी तब बैंको का बहुत सारा धन डूब गया। वे अपने ग्राहको की माँग पूरी नही कर पाये तथा उन्हे अपना करोबार बंद कर देना पड़ा।

(9) मशिन-जनित बेरोजगारी ⇒ प्रमथ महायुद्ध के पश्चात अमेरिकी कारखानो में श्रम-बचत मशीनों का प्रयोग बहुत बढ़ गया। यांत्रिक प्रगति ने बेरोजगारो की सेना में वृद्धि की। जो कीन्स के शब्दावली मे "प्रभावपूर्ण माँग के न्यूनता का कारण बना।